UGC Approved No. 48596

ISSN No. : 2229-3728

# निब्बान बोधि

# Nibbāna Bodhi

The Research Journal of Religion, Philosophy, Culture and Social Sciences

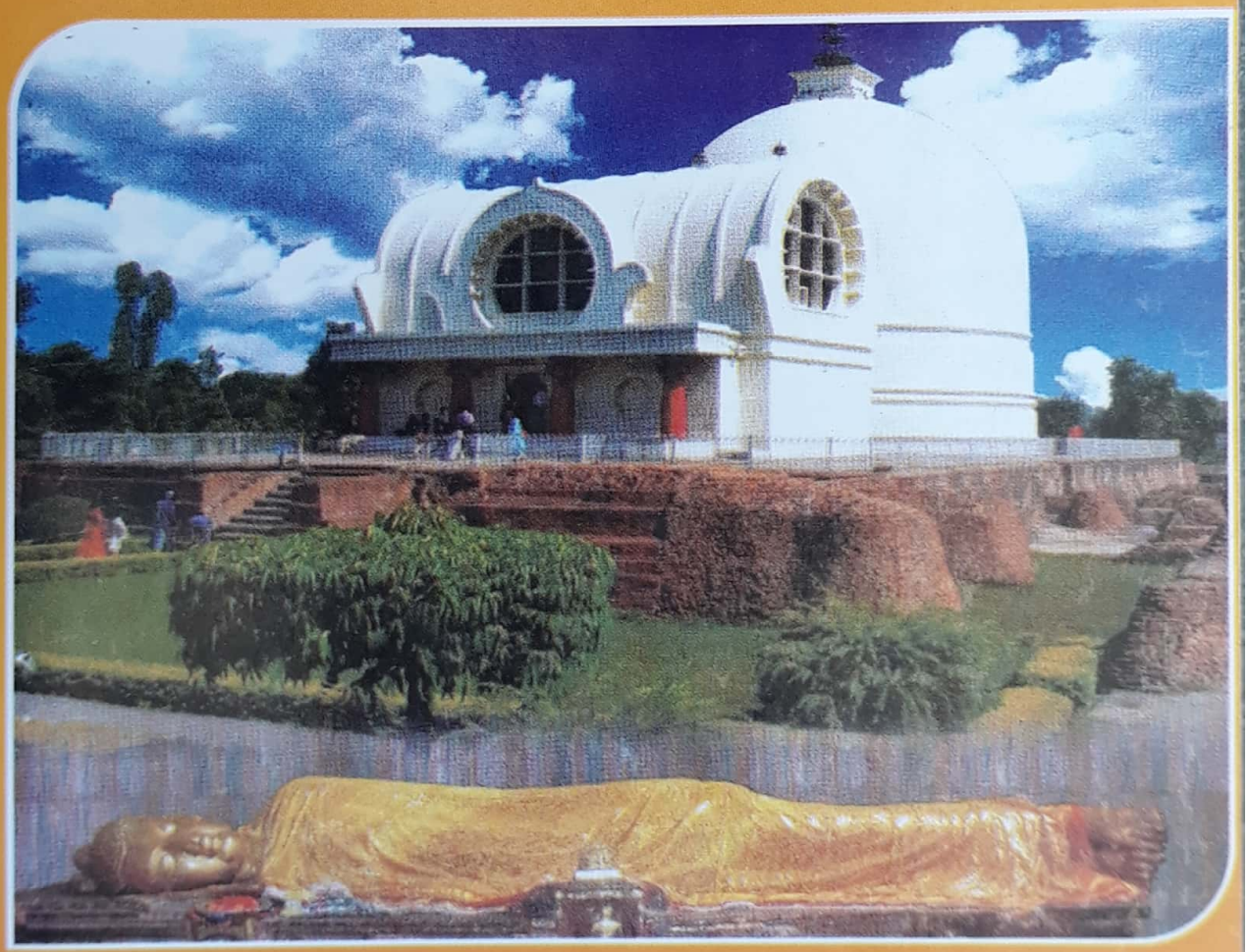

Kushinagar Bhikshu Sangha, Kushinagar
Pāli Society of India, Varanasi

Scanned by CamScanner

ISSN No. : 2229-3728
UGC Approved No. 48596

# निब्बान बोधि
# Nibbāna Bodhi

The Research Journal of Religion, Philosophy,
Culture and Social Sciences
Yearly Multilingual (Hindi & English)

561 B.E. Volume XII
ssue : April 2018 Date of Publication : 01.04.2018

Editor
DR. GYANDITYA SHAKYA
Assistant Professor
School of Buddhist Studies & Civilization
Gautam Buddha University, Greator Noida,
Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh

Co-Editor
BUDDHA GHOSH
Assistant Professor
Department of Pāli & Buddhist Studies
Banaras Hindu University
Varanasi, Uttar Pradesh

Kushinagar Bhikshu Sangha, Kushinagar
Pāli Society of India, Varanasi

Scanned by CamScanner

**Chief Patron**
**AGGAMAHAPANDITA BHADANTA GYANESHWAR**
Chief High Priest
Myanmar Buddhist Temple, Kushinagar
Post & District : Kushinagar, Uttar Pradesh (India)

**Editorial Board**
**PROF. BHIKSHU SATYAPALA**
Former Head
Department of Buddhist Studies
University of Delhi, Delhi (India)

**PROF. RAMESH PRASAD**
Head
Department of Pali & Theravada
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi, Uttar Pradesh (India)

**BHIKKHU NAND RATAN**
Chief High Priest
Sri Lanka Buddha Vihara
Kushinagar, Near Ramabhar Stupa,
Post & District : Kushina r, Uttar Pradesh (India)

**PUBLISHED ON**
1st April 2018
95th Birth Anniversary of Tripitakacharya Dr. Bhikshu Dharmarakshit

**PUBLISHED BY**
Kushnagar Bhikshu Sangha, Kushinagar & Pali Society of India, Varanasi

**CORRESPONDENCE ADDRESS**
Myanmar Buddhist Temple, Kushinagar
Post & District : Kushniagar-274403, Uttar Pradesh (India)
E-mail Address : nibban_bodhi@yahoo.com, palidivaso@gmail.com
Contact Numbers : +91-9935874061, 9935632420 & 9868060572

**Note :** The matter composed in articles of the *Nibbâna Bodhi* are scholar's view The journal will not bear any responsibility for them. All the positions the Editorial Board inlcuding Editor & Co-Editor are honorary.

**Printed in India** **Price : ₹ 1(**

# समर्पण

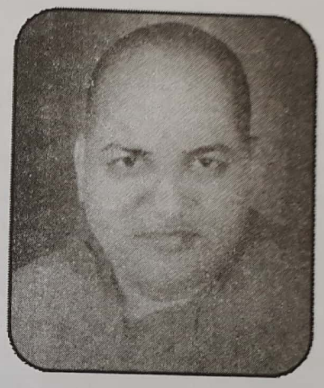

**(1 अप्रैल 1923- 23 मई 1977)**

भगवान गौतम बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली
कुशीनगर के समीप हतवा ग्राम में जन्मे
बौद्ध धर्म-दर्शन के मर्मज्ञ महामनीषी

**त्रिपिटकाचार्य डॉ० भिक्षु धर्मरक्षित महास्थविर,**

जिन्होंने आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के साहित्यिक,
पुरातात्विक एवं धार्मिक पुनर्जागरण में अविस्मरणीय
भूमिका निभाई, को सादर समर्पित

Scanned by CamScanner

# सम्पादकीय

बौद्ध धर्म एक विश्व प्रसिद्ध कल्याणकारी धर्म है। बौद्ध धर्म-दर्शन में पर-सेवा की भावना का अति विशिष्ट स्थान दिया गया है। संसार के दुःखी सत्वों की सेवा करना पुण्यकर्म है, जिसमें व्यक्ति को सदैव लीन रहना चाहिए। सम्बोधि प्राप्ति के बाद स्वयं शाक्यमुनि गौतम बुद्ध भी सहम्पति ब्रह्मा द्वारा परसेवा (सार्वजनिक सेवा) के निवेदन को सुनकर ही धम्म की देशना करने के लिए तैयार हुए थे; क्योंकि उनके मन में भी परसेवा के लिए विशेष स्थान था। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं में सेवाभाव को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया है। सेवा के द्वारा व्यक्ति समाज के हित एवं कल्याण के लिए कार्य कर सकता है। पर-सेवा के सम्यक् रूप से पालन से ही समाज में सुख-शान्ति, भाईचारे एवं विश्व-बन्धुत्व की स्थापना की जा सकती है। इसीलिए सेवाभाव की अभिव्यक्ति को सामाजिक संलग्न बौद्ध धर्म के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप स्वीकार किया जा सकता है। बुद्धोपदिष्ट पर-सेवा की परिपूर्ति बुद्धवाणी की सरल एवं आकर्षक भाषा-शैली के द्वारा मानव जीवनोपयोगी सद्धर्म को जन-जन तक पहुँचा कर भी की जा सकती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पालि सोसायटी ऑफ इण्डिया (वाराणसी) विगत कुछ वर्षों से बौद्ध धर्म विषयक विविध प्रकार की साहित्यिक गतिविधियाँ कर रही है। यह प्रसन्नता का विषय है कि बौद्ध धर्म-दर्शन जैसे कल्याणकारी धम्म को जन-जन तक पहुँचाने के पवित्र कार्य के उद्देश्य से *निब्बान बोधि* का प्रकाशन् सन् 2007 से लगातार किया जा रहा है। इसी शृंखला में पालि सोसायटी ऑफ इण्डिया (वाराणसी) एवं कुशीनगर भिक्षु संघ (कुशीनगर) के संयुक्त सहयोग से *निब्बान बोधि* का बारहवाँ अंक अप्रैल 2018 में प्रकाशित किया जा रहा है। पालि भाषा एवं साहित्य के साथ-साथ बौद्ध धर्म-दर्शन के विविध विषयों पर आधारित विद्वानों एवं शोधार्थियों द्वारा लिखे गये लेखों व शोध-पत्रों के संग्रह *'निब्बान बोधि'* का बारहवाँ अंक भी पालि भाषा व साहित्य की उपयोगिता को जन-जन तक पहुँचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा, ऐसी आशा है।

**भवतु सब्बमङ्गलं**

**भवदीय**

**दिनांक : 01.04.2018**
**स्थान : वाराणसी**

**डॉ० ज्ञानादित्य शाक्य**
**सहायक प्रोफेसर**
**बौद्ध अध्ययन एवं सभ्यता संकाय**
**गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, प्रेटर नोएडा**
**e-mail : gyanaditya_shakya@yahoo.co.in**

**बुद्ध घोष**
**सहायक प्रोफेसर**
**पालि एवं बौद्ध अध्ययन विभाग**
**काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी**
**e-mail : buddhapali2211@gmail.com**

Scanned by CamScanner

# विषय-सूची


सम्पादकीय

१. पालि साहित्य में निहित सामाजिक सन्देश 10-15
डॉ० रमेशचन्द्र नेगी

२. बुद्धोपदिष्ट धम्मिक-सुत्त की मानव जीवन में उपादेयता 16-20
डॉ० दिवाकर गरवा

३. मिलिन्द प्रश्न की संवाद शैली में बौद्ध संस्कृति 21-26
डॉ० मालती साखरे

४. भाषा विज्ञान की दृष्टि से उर्दू और पालि का रिश्ता 27-31
डॉ० ओबैदुल गफ्फार

५. नारी सशक्तिकरण की प्रथम पुस्तक : थेरीगाथा 32-35
डॉ० नीलम कुमारी

६. बौद्ध दर्शन में सम्बोधि विमर्श 36-41
डॉ० हरिदत्त त्रिपाठी

७. सुगत बुद्ध के समकालिक तापस 42-45
बुद्ध घोष

८. गौतम बुद्ध के जीवन में अहिंसा भावना 46-51
डॉ० एम० लाल चैतन्य

९. पालि साहित्य में विपस्सना का विश्लेषणात्मक अध्ययन 52-56
स्वतंत्र कुशवाहा

१०. सुत्तपिटक में वर्णित व्यावसायिक समाज : एक अवलोकन 57-62
सुनील कुमार

११. पालि साहित्य में चार आर्यसत्य का महत्व 63-66
राहुल राय

१२. गृहस्थ जीवन के लिए गौतम बुद्ध के उपदेश : पालि साहित्य के सन्दर्भ में 67-72
सर्वेश कुमार

१३. बौद्ध दर्शन में आयतन : एक संकल्पना 73-77
अर्चना देवराज हाडके

१४. वैश्विक धर्म का मूलाधार : पंचशील 78-82
प्रतिभा बापूजी गेडामा


Scanned by CamScanner

१५.संवैधानिक राष्ट्रीय जीवन में बुद्ध धम्म का महत्व 83-
(डॉ० बाबा साहब अम्बेडकर का स्वतंत्र चिन्तन)
बिना नगरारे
१६.वुत्तोदय : एक अध्ययन 88-
फ्रासोमसाक वण्णसन
१७.भिक्षु धर्मरक्षित विरचित पालि-पाठ-माला की उपादेयता 90-
उमादत्त
१८.बौद्ध धर्म में पर्यावरण की अवधारणा 95-
सुमन कुमारी
१९.बौद्ध दर्शन के नैतिक विचार 99-1
नैन्सी गुप्ता
२०.बौद्ध धम्म का श्रीलंका की महिलाओं पर प्रभाव 102-1
निलिमा मारोतराव गजभिये
२१.धम्मपद के विभिन्न संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन 106-1
शत्रुघ्न कुमार
२२.योग दर्शन में चित्त : एक अध्ययन 112-1
पिंकु कुमार
२३.Gautam Buddha : The First Moderator of Pali Grammar Tradition 118-1
Rekha Khushal Badole
२४.An Introduction to Tibetan Buddhist Art and Iconography 124-1
Dr. Gurmet Dorjey
२५.The Symbolism of the Five Dhyani Buddhas in Vajrayana Buddhism 135-1
Dr. Manish T. Meshram
२६.First Schism in the Sangha 143-1
Kalpana Moon
२७.Buddhist Heritage in Bangladesh with special reference to Paharpura and Mainamati 149-1
Dhammaratana
२८.Buddhism and Quality Education 154-
Sushma Shree
२९.Social Approach of Âcârya Úânti Deva 159-168
Rajeev Kumar
३०.The Four Noble Truths 169-172
Bijay Megi
३१.A Historical Study of Buddhism in Bangladesh 173-177
Sandip L. Shambharkar
३२.ग्रन्थ-समीक्षा-छकेसधातुवंस 178-180
(शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के छः केश-धातुओं का इतिहास)
डॉ० सुरजीत कुमार सिंह
३३.पालि दिवस का ८वाँ समारोह श्रावस्ती में सम्पन्न : एक रिपोर्ट 181-183
अजय कुमार मौर्य
३४.पालि सोसायटी ऑफ इण्डिया, वाराणसी के लक्ष्य 184

❖

Scanned by CamScanner

# पालि साहित्य में निहित सामाजिक सन्देश

*डॉ० रमेशचन्द्र नेगी

आज से २५६१ वर्ष पूर्व इस धरती पर एक ऐसे व्यक्ति ने जन्म लिया, जिसने सम्पूर्ण जम्बूद्वीप सहित विश्व के समस्त समाज को कल्याण के मार्ग पर लाने का अनुपम योगदान दिया। तब से लेकर आज तक यह कार्य उनकी अनुकम्पा से निरन्तर जारी है और आज भी पालि साहित्य में निहित बुद्ध के उपदेश विश्व शान्ति हेतु बहुत बड़ा योगदान देरहे हैं, इसमें तनिक भी कोई सन्देह नहीं है।

तथागत सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदेशित वचन संसार में अपूर्व हैं। ऐसा वचन इसके पूर्व कदापि नहीं सुना गया। बुद्ध के उपदेशों का श्रमण, ब्राह्मण, देव, मार तथा ब्रह्मा आदि किसी भी अन्य के द्वारा विरोध नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे सार्वजनीन, सार्वदेशिक और सार्वकालिक हैं। मज्झिमनिकाय के सच्चविभंगसुत्त में कहा गया है, यथा- तथागतेन, भिक्खवे, अरहता सम्मासम्बुद्धेन बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा उत्तानीकम्मं।[१] संसार दुःखमय है और यह दुःख वास्तव में आकस्मिक है, न कि कूटस्थ अथवा नित्य। बुद्ध ने जब गृहत्याग किया, तब उन्होंने जिस उद्देश्य के साथ राजपाट को छोड़ा, वह वास्तव में सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिए ही था। उनके उद्देश्य में कोई भी पक्षपात नहीं था। उन्होंने न ही मानव समाज में भेद किया और न ही प्राणियों में भेद किया। उनका कहना था कि जो भी प्राणी प्राणवान् है, वह वास्तव में दुःखी ही है। कोई ऐसा प्राणी मिलना मुश्किल है, जो दुःख नहीं हो। अवीचि नरक से लेकर भवाग्र तक के सत्त्व दुःख-दुःखता आदि तीन प्रकार के दुःखों में से किसी न किसी दुःख से पीड़ित होते ही हैं। अतः राजकुमार सिद्धार्थ ने राजसी वैभव का त्याग समस्त प्राणियों को जाति, जरा, रोग और मरण से मुक्त कराने के लिये ही किया, जो कि सम्पूर्ण प्राणियों का मुख्य उद्देश्य है और वे निरन्तर इसके लिये अहोरात्र प्रयत्न करते रहते हैं।

सिद्धार्थ ने जानना चाहा कि जाति, रोग आदि का अन्त कैसे हो सकता है? उसके उपाय क्या हैं? अन्त में वे अपने इस उद्देश्य में पूरे रूप से सफल हुए तथा अपने वैराग्य-प्राप्ति के छः वर्ष बाद वैशाख पूर्णिमा के ऊषाकाल में इन्होंने बुद्धत्व अर्थात् बोधि को प्राप्त किया। यह मानव समाज के लिये एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी और अपूर्व भी थी, जो बुद्ध

*सहायक प्रोफेसर/कार्यकारी प्रधान सम्पादक, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी



के वचनों से भी स्पष्ट होता है। उन्होंने जाना कि दुःख क्या है? और उसका कारण क्या है? यदि कोई भी वस्तु अथवा परिस्थिति कारण से उत्पन्न होती है, तब उस कारण को हटाने पर वह दुःख अथवा परिस्थिति बदल जाती है। यह एक वैज्ञानिक नियम है, यह प्रकृति का सिद्धान्त है, यह एक धर्म है और धर्मता भी है, जो सभी अन्वेषकों के लिये सदा समान होता है। इसका यह अर्थ हुआ कि यदि दुःख हैं, तब उन दुःखों के कारणों का निरोध हो सकता है। उन कारणों को किसी उपाय द्वारा उखाड़े जा सकते हैं तथा ऐसा करते-करते सम्पूर्ण क्लेश रूपी हेतुओं को समाप्त किया जा सकता है, जो चित्त पर असंख्या जन्मों सेपड़े हैं और जो प्राणियों के दुःखों का मूल कारण है।

जिस कारण प्रत्यय अथवा हेतुओं के द्वारा यह निरुद्ध होता है, उसे मार्ग कहा गया है, जो बौद्ध सूत्रों में अष्टांगिक-मार्ग के नाम से अत्यन्त प्रसिद्ध है। अष्टांगिक-मार्ग वास्तव में शील, समाधि तथा प्रज्ञा का समूह है, जो चित्त पर पड़े क्लेशों को निकालने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

समस्त हेतु-प्रत्यय को ससाधक चार आर्यसत्य के द्वारा सरलता से समझ सकते हैं। अतः दुःख, दुःखनिरोध आदि यह चार प्रकार की क्रियायें बौद्ध सूत्र एवं शास्त्रों में चार आर्यसत्य के नाम से सुप्रसिद्ध हैं। ये चार क्रमशः संसार एवं निर्वाण की उत्पत्ति को स्पष्ट करते हैं इसलिये सच्चविभंगसुत्त में कहा गया है, यथा-कतमेसं चतुन्नं? दुक्खस्स अरियसच्चस्स, दुखसमुदयस्स अरियसच्चस्स, दुखनिरोधस्स अरियसच्चस्स, दुखनिरोधगामिनिया पटिपदाय अरियसच्चस्स।[१] यह चार आर्यसत्य, सम्पूर्ण सत्य अर्थात् निर्वाण की आधार शिलायें हैं और जिस मुक्ति की खोज समस्त प्राणी अहोरात्र सदा करते रहते हैं, उसका आधार यही चार आर्यसत्य हैं। तथागत सम्यक् सम्बुद्ध ने अपने ४५ वर्ष पर्यन्त जो भी उपदेश दिये, उन सबका आधार यही चार आर्यसत्य हैं।

यह सम्पूर्ण मानव समाज के लिये बुद्ध की बहुत बड़ी देन है, जिसके द्वारा कोई भी प्राणी अपने भीतर के वास्तविक सुख को प्राप्त कर सकता है तथा हेतु-प्रत्ययवाद को बहुत ही सरलता से समझ सकता है। बुद्ध द्वारा उपदिष्ट प्रतीत्यसमुत्पाद इन्ही चार आर्यसत्यों के आधार पर अत्यन्त स्पष्ट होता है।

तथागत सम्यक् सम्बुद्ध का सद्धर्म विश्व के सम्पूर्ण समाज के लिये है, क्योंकि धर्म स्वय में किसी विशेष समाज की परवाह नहीं करता। अर्थात् सद्धर्म कोई भी समाज, जो मानव निर्मित हैं, उनमें पक्षपात नहीं करता। सद्धर्म में सम्प्रदायवाद तथा पक्षपात के लिये कोई जगह नहीं है। यह तो सार्वजनीन है, सार्वदेशिक है और सर्वकालिक है।

यह तो प्रकृति का नियम है कि क्रोध कोई भी करे तो उसका अहित अवश्य होता

Scanned by CamScanner

# पालि सोसायटी ऑफ इण्डिया वाराणसी के लक्ष्य

पालि सोसायटी ऑफ इण्डिया (वाराणसी) एक ऐसी संस्था है, जो पालि भाषा व साहित्य के संरक्षण व विकास को गति प्रदान करने हेतु समर्पित है। इस संस्था के मुख्य लक्ष्य निम्नवत् हैं—

- पालि भाषा व साहित्य के विकास के लिए शिक्षण संस्थानों व प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना करना।
- बुद्धवचन को संरक्षित करने हेतु छात्रों व शोधार्थियों को प्रेरित करना।
- पालि भाषा व साहित्य पर संगोष्ठियों एवं सेमिनारों का आयोजन करना।
- पालि भाषा व साहित्य के महत्वपूर्ण व अप्रकाशित ग्रन्थों का सम्पादन व अनुवाद करके प्रकाशित करना।
- पालि भाषा व साहित्य के विकास के लिए पत्र, पत्रिकाओं एवं शोध-पत्रिकाओं का प्रकाशन करना।
- पालि भाषा व साहित्य के विकास में योगदान देने वाले विद्वज्जनों को *'तिपिटकाचरिय भिक्खु धम्मरक्खित पालि सम्मान'* से सम्मानित करना।
- पालि भाषा व साहित्य के प्रति आम जनमानस में अभिरुचि उत्पन्न करना।

❖

Scanned by CamScanner

UGC Approved No. 48596 ISSN No. : 2229-3728

Mahabodhi Mahavihar, Bodhagaya

Scanned by CamScanner